[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3487

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

बदलते सामाजिक मूल्य एवं संगीत

डॉ.सुवर्णा तावसे
प्राध्यापक एवं संगीत विभागाध्यक्ष
माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, मोती तबेला,इन्दौर

संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों एवं सांगीतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक है।संगीत समाज की सामाजिक सांस्कृतिक विरासत मानी जाती है।

जब स्मृतियाँ,चिन्ता,द्वेष,मानसिक तनाव,आवेश तथा जटिल भावना,सामाजिक जीवन को नीरस तथा जड़ बना देती है तब कलाएँ विशेषकर संगीत कला समाज व्यक्ति के सामाजिक मूल्य पर विशेष प्रभाव डालती है।

संगीत का समाज से घनिष्ठ संबंध है।संगीत से सुधार अत्यन्त सुगम हो जाता है।संगीत कलाकार अपने कला के सृजन द्वारा समाज में मानवता व सभ्यता की प्रतिस्थापना करता है और व्यक्तिगत जीवन को उत्कृष्ट बनाकर सामाजिक जीवन को भी सफल बना देता है।

वर्तमान समय में समाज के बदलते सामाजिक मूल्यों के साथ संगीत पर भी प्रभाव पडा है।आज टेक्नोलॉजी का बहुत विकास हुआ है।जिससे समाज में चारों ओर युवा वर्ग को प्रलोभन देने वाली प्रवृत्तियाँ पनप रही है। साथ ही वह टी.वी. आदि की तरफ खिंचा जा रहा है।व्यावसायिक मानसिकता बढ जाने से सम्पूर्ण सांगीतिक वातावरण दूषित हो रहा है। आज का मानव समाज जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है,उसमें मानव मात्र के अस्तित्व पर प्रश्न लग गया है।संगीत प्रचार के माध्यम के रूप में व्यापकता के साथ अपनाया जा सकता है जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो।संगीत सामूहिकता के साथ–साथ अनुशासन भी प्रदान करता है।यह अनुशासन संगीत को अपूर्व लय प्रदान करता है और यही लय स्वर से घुलमिलकर हृदयों में संवाद पैदा कर देता है। केवल 'जन–गण–मन' का सामूहिक गान लाखों भारतीयों में देश के प्रति गर्व की भावना पैदा करता है।लोक संगीत का प्रयोग भी इस दृष्टि से अत्यधिक प्रयोग किया जा सकता है क्यों कि लोक संगीत मन के भावों को स्वच्छंद एवं सामूहिक रूप से व्यक्त करने का यह सरलतम माध्यम है।

किसी भी स्वस्थ समाज की कल्पना हम बिना धर्म के नही कर सकते।हमारे ऋषि मुनियों ने समाज को सुव्यवस्थित बनाने के लिए धर्म का उपदेश दिया और इस धर्म की उपलब्धि हमें संगीत के द्वारा ही हुई है।प्रेम और एकता का एकमात्र जन्मदाता धर्म है।समाज में धार्मिक भावना का विकास भी संगीत से ही संभव है।

समाज में समान भाव और समान व्यवहार के फलस्वरूप ही सामाजिक संगठन प्रबल होता है।यह समानता की भावना हमें आध्यात्मिक ज्ञान से प्राप्त होती है।इस ज्ञान की उपलब्धि संगीत के कारण संभव है।संगीत के द्वारा साधना चरमोत्मकर्ष पहुंचती है एवं आध्यामिक ज्ञान से मनुष्य सांसारिक प्रपंच से ऊपर उठ जाता है।जो भावनात्मक एकता स्थापित करने में अत्याधिक समर्थ है।

समाज के बदलते सामाजिक मूल्यों के अन्तर्गत नैतिक मूल्यों की समीक्षा करते हैं तो हम पाते हैं कि इन मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है।

आजसमाजमें अहिंसा,सत्य,परोपकार,अनुशासन,सामाजिकता तथा राष्ट्रीयता के स्थान पर चोरी,लूट,बलात्कार,अन्याय,हिंसा आदि ले रही है।

आज समाज बदला है,उसके साथ ही मूल्य भी बदले हैं,ऐसी स्थिति में संगीत एक ऐसा साधन है,जिससे देश का उत्थान हो सकता है। बच्चों को संगीत द्वारा अनुशासन प्राप्त होता है। अगर वह मंच पर प्रदर्शन करता है तो वह सम्मान करना,कल्पनाशीलता आदि के बारे में सीखता है,साथ ही आत्मविश्वास बढाने में मदद करता है।संगीत का प्रभाव व्यक्ति के मन,शरीर,बुद्धि तथा आत्मा सभी पर होता है,ऐसी स्थिति में यदि बाल्यावस्था से ही संगीत के स्वरों का संस्कार डालना प्रारंभ कर दिया जाय तो उनमें हिंसक प्रवृत्तियों के पनपने की संभावना कम होगी एवं उनका मानसिक विकास संतुलित रूप से

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

होगा।वैसे भी बच्चों को कविता तथा गिनती आदि गाकर सिखाया जाय तो शीघ्र स्मरण हो जाता है।इसलिए अधिकांश शिक्षा शास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने सामान्य शिक्षा के अन्तर्गत संगीत शिक्षा को शिक्षा का आवश्यक अंग माना जाता है।प्रसिद्ध दार्शनिक (प्लेटो के अनुसार) ''संगीत आत्मा व चरित्र का निर्माण करता है। उत्कृष्ट संगीत एक सुव्यवस्थित समाज का गठन करता है,जब कि निम्न स्तर का संगीत राष्ट्र के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।संगीत का राजकीय नियंत्रण समाज के लिए आवश्यक है।''

संगीत मानव व्यवहार को अनुशासित ही नहीं करता वरन् विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति के स्वभाव,भाव को सहज बनाये रखता है।आज समाज के बदलते परिवेश में संगीत से व्यक्तियों की मनोवृत्ति में परिवर्तन करने एवं राष्ट्रीय एकता बनाने में सहायक है। समाज में अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्तियों को शास्त्रीय संगीत के राग,रागिनियों के प्रयोग के माध्यम से सामान्य नागरिक बनाकर जीवन यापन करने योग्य बनाने का प्रयास किया जा रहा है।इस क्षेत्र में देश की महिला पुलिस अधिकारी किरण बेदी ने दिल्ली के तिहाड जेल के कई हिंसक व अपराधी कैदियों के जीवन को संगीत माध्यम से सुधारा है।यह समाज को संगीत का सबसे बडा योगदान है।

सामूहिक गीत गाने से लोगों के बीच में एक भावनात्मक संबंध स्थापित हो जाता है। जब मंदिरों में घंटियों की ध्वनि गूंजने लगती है,आरती की स्वर लहरियाँ प्रारंभ होती है तो मन उल्लासित हो जाता है एवं श्रद्धा भाव से भर जाता है।भजन सुनते है तब मन संगीत की स्वर लहरियों में एकाग्र हो जाता है।ग्रामीण समाज में तो संगीत सामाजिक जीवन में और भी नजदीक जुडा हुआ पाते हैं।दिन भर खेतों में काम करने के बाद में सामूहिक रूप से गाते–बजाते है तब उनका उल्लास देखने ही बनता है।

फसलों की बुवाई से लेकर कटाई तक के कार्यो को सम्पन्न कराने में ग्रामीण समाज ने संगीत को अपने जीवन में स्थान दिया है।लोक उत्सवों के रूप में ग्रामीण समाज में होली,संजा,गणगौर आदि अवसर सूचक गीत गाये जाते है। शहर की अपेक्षा ग्रामीणों ने समाज में संगीत को अधिक अपनाया है।

प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक''अश्वघोष'' बुद्ध के तत्व ज्ञान को समाज में सम्प्रेषित करने के लिए अश्वघोष गायकों की टोलियाँ बनाकर स्थान–स्थान पर घूमते थे और गायन वादन द्वारा अपना लक्ष्य पूर्ण करते थे।

पोलेण्ड के गायक ''पेडेरस्की''ने संगीत के माध्यम से ही जन–जन में, समाज में राष्ट्रीय चेतना जगा दी थी।

आज के बदलते सामाजिक मूल्यों एवं परिवेश में संगीत की सामूहिकता के साथ मनुष्य अनुशासन में भी रहता है।यह अनुशासन संगीत के अपूर्व लय प्रदान करता है और यही लय स्वर से घुलमिलकर ह्रदयों में संवाद पैदा करती है। केवल जन–गण–मन का सामूहिक गान लाखों भारतीयों में देश के प्रति गर्व की भावना पैदा करता है। इसी प्रकार ऐसे कितने ही देश भक्ति के गीत है,उदाहरण के लिए– हम होंगे कामयाब, मेरे वतन के लोगों, इतनी शक्ति हमें देना दाता आदि गीतों के द्वारा अर्थात् संगीत ही तो है जो व्यक्ति को समाजिक बनाने का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली घटक है यह प्रामाणिक सत्य है। संगीत से मनोरंजन तो होता ही है लेकिन मनोरंजन से अधिक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास अर्थात् समाज का विकास जिसमें संगीत के प्रचार प्रसार के माध्यमों का प्रयोग द्वारा ही संभव हो सकता है।जो सैकडों व्याख्यानों के द्वारा संभव नहीं हो सकता है वह एक ही गीत के द्वारा हो सकता है यह अनुभव किया जा चुका है।इसे प्रभावशाली माध्यम के रूप में व्यापकता के साथ अपनाया जा सकता है,जिसमें समाज का कल्याण हो।

समाज के बदलते परिवेश में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में,शिक्षा के प्रचार–प्रसार,सर्वांगीण विकास,शांति संदेश व समाज कल्याण में संगीत की भूमिका जिसमें समाज के हर पहलू पर थोड़ा सा विचार इस शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक अल्प सा प्रयास किया है।

संदर्भ –

1 *समाज मनोविज्ञान – डॉ.राजेन्द्र कुमार शर्मा*
2 *संगीत एवं समाज – डॉ.लालमणि मिश्रा*
3 *संगीत निबंधं कुंज – डॉ. पुष्पा बसु*